भूमिका

बीते कुछ सालों में शोधकर्ताओं के लिए सोशल मीडिया का उदय एक रुचिकर विषय के तौर पर हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सोशल मीडिया द्वारा निर्मित की जाने वाली अस्मिता का अध्ययन किया गया है। सोशल मीडिया प्रभावी और शक्तिशाली हथियार है। मीडिया के इस नवीनतम साधन की सबसे बड़ी विशेषता समान विचारधारा, सांस्कृतिक परिवेश और समान उद्देश्यों को लेकर चलने वाले लोगों का समूहीकरण है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से मिले आँकड़ें बतातें हैं कि प्रवासी भोजपुरियों द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत को सँवारने का कार्य टीम-भावना के साथ किया जा रहा है। वहीं इस अध्ययन के दौरान यह बात सामने आयी कि भोजपुरी सांस्कृतिक अस्मिता को निर्मित करने में सोशल मीडिया एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। सोशल मीडिया पर केंद्रित इस अध्ययन की अपनी सीमाएँ हैं, बावजूद इसके, इस अध्ययन से प्राप्त आँकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं कि सोशल मीडिया पर भोजपुरी अस्मिता केंद्रित वैकल्पिक आंदोलन गतिशील है। इसका असर जमीनी स्तर पर धीरे-धीरे नजर आ रहा है। अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह भी बताते हैं कि मोबाइल फोन के जरिए फेसबुक के इस्तेमाल की आदत और संख्या बढ़ रही है। इस परिदृश्य में सोशल मीडिया के व्यापक महत्त्व और प्रभावशीलता को ऩजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मोबाइल क्रांति के इस दौर ने भोजपुरिया प्रवासियों तक अपनी पैठ बना ली है। इस अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया का हस्तक्षेप प्रवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों और आयामों में बढ़ रहा है। इसकी सहायता से प्रवासियों के बीच भोजपुरी अस्मिता धीरे-धीरे पुनर्जीवित हो रही है।

की वर्ड्स : सोशल मीडिया, अस्मिता, डायस्पोरा एवं प्रवासन, फेसबुक, भोजपुरी, संस्कृति, लोक संस्कृति

लघु शोध प्रबंध की रुपरेखा

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध मुख्यतः पांच अध्यायों में विभक्त है। इसकी संक्षिप्त रूपरेखा का वर्णन निम्नलिखित है-

प्रथम अध्याय - प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के पहले अध्याय में शोध समस्या के मूल बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए अध्ययन के उद्देश्य, प्रासंगिकता, परिसीमन इत्यादि को स्पष्टता के साथ रखा गया है। तदुपरांत साहित्य पुनरावलोकन एवं शोध प्रविधि की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय- मूलतः शोध विषय के अवधारणात्मक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर केंद्रित इस अध्याय में 'की-वर्ड्स' यथा 'भोजपुरी लोक संस्कृति', 'सोशल मीडिया', 'फेसबुक', 'अस्मिता', 'साइबर स्पेस', 'डायस्पोरा', 'डिजिटल डायस्पोरा' के अवधारणात्मक विमर्शों को शामिल किया गया है।

तृतीय अध्याय - इस अध्याय में अंतर्वस्तु- विश्लेषण के माध्यम से साइबर स्पेस में भोजपुरी अस्मिता के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत प्रवासी भोजपुरियों द्वारा बनाए गए फेसबुक पेज *'BHAI'* एवं *'आखर'* पर अध्ययन अवधि 01 जुलाई, 2015 से 31 जुलाई, 2015 तक पोस्ट किये गए अस्मिता केंद्रित पोस्टों का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- इसके अंतर्गत प्रश्नावली से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों की प्रस्तुति एवं विश्लेषण किया गया है। इसे आधार बनाकर सांस्कृतिक अस्मिता निर्माण में फेसबुक की भूमिका को स्पष्टता से विवेचित किया गया है एवं फेसबुक के माध्यम से गतिशील भोजपुरी अस्मिता के डिजिटल आंदोलन को भी व्याख्यायित किया गया है।

पंचम अध्याय- शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को इस अध्याय में शामिल किया गया है। इसी के आधार पर अध्ययन की सामाजिक उपादेयता एवं अकादमिक उपादेयता को ध्यान में रखते हुए कुछ सुझावों को भी रखा गया है।